सरकारी योजनाओं को लाभुकों तक पहुंचा रहीं दीदियां

महिला समूह से जुड़ने के बाद महिलाएं खुद को आत्मनिर्भर बना रही हैं. परिवार की आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित कर रही हैं. सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रही हैं और अपनी एकता का प्रदर्शन कर रही हैं. सरकारी योजनाओं का लाभ सही समय पर लाभुकों को मिले, इससे लिए लगातार प्रयासरत हैं. सिमडेगा में दुर्गम पहाड़ी रास्तों से गुजरते हुए पहाड़ पर चढ़कर महिलाएं टेक होम राशन के तहत पोषणयुक्त आहार गांवों तक पहुंचा रही हैं, ताकि सही समय पर लाभुकों को योजना का लाभ मिल सके और उनका मानसिक व शारीरिक विकास हो सके. यह ग्रामीण महिलाओं की एकता की ताकत है. सरकार की योजना को सफल बनाने के लिए ग्रामीणों का सहयोग जरूरी है.

समूह से आत्मनिर्भर बनीं रेखा देवी

अपनी दुकान में रेखा देवी.

रामगढ़ जिले के चितरपुर प्रखंड अंतर्गत पूर्वी चितरपुर पंचायत की रहनेवाली रेखा देवी समूह से जुड़ने के बाद आज अपने परिवार के साथ खुशहाल जिंदगी जी रही हैं. इतना ही नहीं आज उनकी अपनी पहचान भी है. पहले उनकी अपनी कोई पहचान नहीं थी. वर्ष 2014 में शादी होने के बाद घर का काम करना ही उनकी दिनचर्या थी. घर से बाहर निकलने के लिए भी सोचना पड़ता था. पढ़ी-लिखी होने के बावजूद कोई रास्ता समझ में नहीं आ रहा था. परिवार में पति अजय चौधरी, एक बेटा और बेटी हैं. इनके साथ किसी तरह अपना जीवन यापन कर रही थीं. इसके बाद वर्ष 2017 में रेखा को जेएसएलपीएस द्वारा संचालित महिला समूह की जानकारी मिली. सीआरपी दीदियों द्वारा उनके गांव में भी समूह का गठन किया गया. समूह की गतिविधि की जानकारी हासिल करने के बाद वो हरियाली आजीविका सखी मंडल से जुड़ गयीं. समूह में कुल 11 सदस्य थीं. समूह बनने के बाद रेखा देवी को समूह में बुक कीपर बनाया गया. चार महीने तक बुक कीपर का काम करते हुए वर्ष 2018 में रेखा का चयन आजीविका पशु सखी के तौर पर हुआ. पशु सखी बनने के बाद रेखा ने ग्रामीणों के घर जाकर पशुधन का सर्वे किया. किस घर में कितनी मुर्गी, गाय, बकरी हैं, इसका सर्वे किया गया. सर्वे करने के साथ-साथ रेखा को पशु सखी का प्रशिक्षण भी दिया गया. इसके साथ ही उन्हें उनके काम के लिए पैसे भी मिलने लगे. इसी बीच रेखा एक दुकान खोलने के बारे में सोचीं और समूह से 25 हजार रुपये लोन लेकर अपने घर में ही एक छोटी दुकान खोलीं. दुकान खोलने से उनकी आमदनी बढ़ने लगी. रोज अच्छी आमदनी होने से जहां घर की छोटी-मोटी जरूरतें पूरी होने लगीं, वहीं लोन भी चुकाने लगीं. रेखा का मानना है कि अगर वह समूह से नहीं जुड़तीं, तो उनका कोई अस्तित्व नहीं होता. कहती हैं कि वो अपनी दुकान में और पूंजी लगाकर इसे बढ़ाना चाहती हैं. आज अपने पैरों पर खड़ा होकर वह बहुत खुश हैं. कहती हैं कि जेएसएलपीएस ने न सिर्फ उनका आत्मविश्वास बढ़ाया, बल्कि जिंदगी जीने का नया आधार भी दिया. गांव की अन्य महिलाएं भी समूह से जुड़ें, ताकि उनकी भी आर्थिक स्थिति मजबूत हो सके और जीवन में बदलाव आये.

अंजुम बानो

प्रखंड : चितरपुर
जिला : रामगढ़

स्कूली छात्रों ने निकाली जागरूकता रैली

मुनिया देवी

प्रखंड : डुमरी
जिला : गिरिडीह

जागरूकता रैली में शामिल छात्र-छात्राएं.

गिरिडीह जिला अंतर्गत डुमरी प्रखंड के राजकीय प्राथमिक विद्यालय के छात्रों ने जागरूकता रैली का आयोजन किया. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ विषय पर आयोजित इस जागरूकता रैली में छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया. जागरूकता रैली डुमरी मोड़ से लेकर जामतारा पंचायत तक गयी. इस जागरूकता रैली के दौरान बच्चों ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के नारे भी लगाये और ग्रामीणों को जागरूक किया. रैली के दौरान शिक्षक सतीश वर्णवाल ने बताया कि देश में लगातार बेटियों की संख्या कम हो रही है. माता-पिता बेटा और बेटी में भदभाव करते हैं. बेटियों को शिक्षा ग्रहण करने के मौलिक अधिकार से वंचित रखा जाता है. उन्हें स्कूल नहीं भेजकर घर के कार्यों में लगाया जाता है. बेटियों को बोझ समझा जाता है और कम उम्र में ही बेटियों की शादी करा दी जाती है. अपनी बेटियों की इस हालत के जिम्मेदार खुद माता-पिता हैं. इन सभी कारणों को देखते हुए बेटियों के प्रति ग्रामीणों को जागरूक करने के लिए स्कूल के शिक्षक व बच्चों के साथ जागरूकता रैली निकाली गयी है. रैली में नारा लगाकर बच्चे माता-पिता को जागरूक कर रहे हैं. आठवीं कक्षा की छात्रा नेहा कुमारी बताती हैं कि हमारे स्कूल में बेटियों की शिक्षा के लिए पूरी व्यवस्था की गयी है. स्कूल के लिए ड्रेस, जूता और बैग लेने के लिए खाते में पैसे आ जाते हैं. सभी शिक्षक अच्छे से पढ़ाते हैं. उन्हें स्कूल में कहा जाता है कि उनके घर के आस-पास की जो भी बच्चे- बच्चियां स्कूल नहीं आते हैं, उनके माता-पिता को अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित करें. रैली के दौरान छात्र-छात्राओं में काफी उत्साह देखा गया.

दीदियों ने आंगनबाड़ी तक पहुंचाया टेक होम राशन

प्रियंका बिलूंग

प्रखंड : पाकरटांड़
जिला : सिमडेगा

सुदूर गांव के आंगनबाड़ी केंद्र में सिर पर ढो राशन पहुंचातीं समूह की दीदियां.

सिमडेगा जिला अंतर्गत पाकरटांड़ प्रखंड की कई पंचायतों के गांवों में महिला समूह की दीदियों द्वारा टेक होम राशन के तहत राशन पहुंचाया गया. राशन वैसे गांवों में पहुंचाया गया, जो दुर्गम क्षेत्रों में हैं. ये पहाड़ी इलाके हैं, जहां पर आवागमन की सुविधा नहीं है. इन क्षेत्रों में राशन वितरण बहुत कठिन होता है. ऐसे में ग्राम संगठन की दीदियों ने इन क्षेत्रों में अपने सिर पर राशन ढोकर गांवों तक पहुंचाया. इस दौरान पाकरटांड़ पंचायत के ग्रोन्डाबेंडा, सलपुर पंचायत के हल्दीबेड़ा, चिरोबेड़ा, रेगारपानी, ढोंगीपानी, बारहलेटा और क्रुसकेला पंचायत के सलोंगा, गोंदलीपानी, सारूबेड़ा, कटासारू, सिरुपाधिया जैसी अनेक जगहों पर राशन पहुंचाया गया. ग्राम संगठन की दीदियों ने कहा कि टेक होम राशन को लेकर ग्राम संगठन की परेशानी बढ़ी हुई थी, क्योंकि समय पर राशन के पैकेट को आंगनबाड़ी केंद्रों तक पहुंचाना था. माइकल मड़की और तहरीमा नेस्सा का भरपूर सहयोग मिला. इससे दीदियों का हौसला बढ़ा है. यही वजह है कि इन दुर्गम क्षेत्रों में भी राशन पहुंच रहा है. दीदियों की कठिन परिश्रम के कारण ही सरकार की यह योजना धरातल पर पहुंच रही है. अब ग्रामीण महिलाएं यह बात समझ रही हैं कि इस योजना को धरातल पर लाना बहुत जरूरी है. इसके जरिये ही गांव के लाभुकों को पौष्टिक आहार मिल पा रहा है. योजना का लाभ लाभार्थियों को मानसिक और शारीरिक रूप से मिलेगा. कुपोषण दूर होगा, महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार होगा. योजना के तहत चार प्रकार के लाभुक होते हैं जिन्हें लाभ मिलता है. गर्भवती एवं धातु महिला, छह से तीन वर्ष की आयु वर्ग तक के बच्चे और कुपोषित बच्चे शामिल हैं. टेक होम राशन के तहत काम करके ग्राम संगठन की महिलाएं काफी खुश हैं. इसके जरिये उन्हें कुछ कर दिखाने का मौका मिला है.

सोहराई पेंटिंग से मिली पहचान

सोहराई पेंटिंग बनातीं सुनीता.

रांची जिला अंतर्गत नगड़ी प्रखंड के सुगदा गांव की सुनीता बागवार आज एक सफल उद्यमी बन गयी हैं. सुनीता कल तक अपने घर की चहारदीवारी के अंदर कैद रहती थीं, पर महिला समूह से जुड़ने के बाद उनमें नयी ताकत आ गयी और आज उनका जीवन बदल गया है. पहले उनके परिवार की हालत यह थी कि घर में कमाने वाला एक था, जिससे घर का खर्च चलाना मुश्किल था. इसके बाद वर्ष 2015 में सुनीता कमल महिला समिति से जुड़ गयीं. समिति से जुड़ने के बाद समूह की महिलाओं ने कुछ करने का विचार किया. सुनीता बागवार को सोहराई पेंटिंग आती थी. इसलिए सभी ने सोहराई पेंटिंग के जरिये आगे बढ़ने का मन बनाया. सोहराई पेंटिंग पहले नये घर, शादी ब्याह के आयोजनों में घर की दीवारों पर और त्योहारों में घर की दीवारों पर सजावट के लिए बनायी जाती थी. यह एक पारंपरिक आदिवासी कला है. इस कला की शुरुआत सबसे पहले हजारीबाग जिले के बादम क्षेत्र में वर्षों पहले हुई थी. झारखंड में आज भी आदिवासी बहुल क्षेत्रों में सोहराई पर्व मनाया जाता है. इस पर्व के दौरान सफेद मिट्टी से घर की महिलाएं अपने घरों में डिजाइन बनाती हैं. दीवारों पर महिलाओं के हाथ का हुनर दिखता है. सफेद मिट्टी का उपयोग अब कम होता है. सफेद मिट्टी की जगह अब लोग चूने का इस्तेमाल करते हैं. जानकारों के मुताबिक, बादम राज में जब किसी युवराज का विवाह होता था, तो उसकी याद के लिए दीवारों पर कुछ चिन्ह अंकित किये जाते थे . इस तरह से इस सुनहरे अतीत वाली कला को आगे बढ़ाने के लिए सुनीता बागवार ने सोहराई पेंटिंग को अपना व्यवसाय का जरिया बनाया है. वह बताती हैं कि आजीविका मिशन के जरिये उन्हें न सिर्फ अपने राज्य में, बल्कि दिल्ली, मुंबई, धनबाद, पटना, हरियाणा जैसे राज्यों में जाकर अपनी कला को प्रदर्शित करने का मौका मिला है. आजीविका समूह के जरिये ही उन्हें अपने हुनर को निखारने का मौका मिला है. आज अपने हुनर और काबिलियत के दम पर उनकी अपनी पहचान है. लोग उनके द्वारा बनायी गयी सोहराई पेंटिंग को खूब पसंद करते हैं. इसी कला की बदौलत सुनीता को रोजगार भी मिला है.

नयनतारा कुमारी

प्रखंड : लेस्लीगंज
जिला : पलामू

मशरूम उगाकर बनीं आत्मनिर्भर

जानकी कुमारी

प्रखंड : सारवां
जिला : देवघर

देवघर जिला अंतर्गत सारवां प्रखंड के शिवपुर (दलदली) गांव की सरिता देवी की आज गांव में अपनी अलग पहचान है. अपनी मेहनत के दम पर आज वो आत्मनिर्भर बन गयी हैं. सरिता पढ़ने-लिखने में समर्थ नहीं थीं. पति देवघर में मजदूरी करते थे. इससे किसी प्रकार से घर का गुजारा चलता था. परिवार के पास खेती करने के लिए पर्याप्त जमीन भी नहीं थी, ताकि परिवार खेती-बारी कर अपना गुजारा कर सके. इसके कारण छह परिवारों का पालन-पोषण करने में बहुत मुश्किल हो रही थी. इस बीच सरिता को जेएसएलपीएस द्वारा संचालित महिला समूह की जानकारी मिली तो वो समूह से जुड़ गयीं. समूह से जुड़ने के छह महीने बाद उन्हें मशरूम की खेती के लिए प्रशिक्षण दिया गया. इसके बाद उन्होंने समूह से एक हजार रुपये का लोन लिया और मशरूम की खेती शुरू की. मशरूम की खेती से सरिता को तीन से चार हजार रुपये की आमदनी हुई. इसके बाद सरिता मशरूम की खेती में रम गयीं. कड़ी मेहनत का असर दिखा. पैदावार बढ़ गयी और इस तरह बढ़ गयी उनकी आमदनी. सरिता अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन जी रही हैं.

मुर्गीपालन से बदली जिंदगी

सविता कुमारी

प्रखंड : सारवां
जिला : देवघर

देवघर जिले के सारवां प्रखंड अंतर्गत टीकोरायडीह गांव की सुलेखा मुर्गीपालन के जरिये आगे बढ़ रही हैं. अपने परिवार के साथ खुशहाल जिंदगी जी रही हैं. पिछले एक साल से सुलेखा मुर्गीपालन का व्यवसाय कर रही हैं. सुलेखा बताती हैं कि यह एक ऐसा व्यवसाय है, जिसमें कम लागत में ज्यादा मुनाफा कमाया जा सकता है. कहती हैं कि इस कार्य में उनके पति का पूरा सहयोग मिलता है. दोनों मिलकर मुर्गीपालन करते हैं. सुलेखा ने बताया कि सबसे पहले समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने मुर्गीपालन करने के लिए समूह से 45 हजार रुपये का लोन लिया और उससे 250 चूजे खरीद कर मुर्गीपालन शुरू किया. पहली बार में ही उन्हें 10 हजार रुपये की आमदनी हुई. अब उनका यह व्यवसाय बहुत अच्छा चल रहा है. आगे की योजना के बारे में बताते हुए सुलेखा कहती हैं कि अब वो एक और मुर्गी फार्म खोलना चाहती हैं. फिलहाल सुलेखा हर रोज 30-40 किलो मुर्गी घर से बेचती हैं. आसपास बाजार होने के कारण मुर्गियों की अच्छी मांग है. चारा भी आसानी से मिल जाता है. घर आकर भी ग्राहक और दुकानदार मुर्गी ले जाते हैं.

पशुपालन के साथ कर रही हैं खेती

कीर्ति देवी

प्रखंड : बुढ़मू
जिला : रांची

रांची जिले के बुढ़मू प्रखंड अंतर्गत बुढ़मू गांव की ललिता देवी की जिंदगी में खेती के जरिये हरियाली आ रही है. कृषि और पशुपालन करते हुए आज वो आत्मनिर्भर बन चुकी हैं. अब उन्हें अपनी जरूरतों के लिए किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ता है. उनके जीवन में यह बदलाव महिला समूह से जुड़ने के बाद आया है. पांच साल पहले ललिता मां शेरावाली महिला समूह से जुड़ गयी थीं. समूह से 30 हजार रुपये लोन लेकर उन्होंने दो गाय खरीदी और दूध बेचने लगीं. इसके बाद वह दूध के पैसे से जेएसएलपीएस की ओर से दिये जा रहे केले के पौधे खरीदीं और उसे अपने खेत में लगाया. केले का बागान देख उत्साहित होकर कहती हैं कि अब उनके जीवन में खुशहाली आयेगी. ललिता अपने समूह में बुक कीपर भी हैं. उनके पति सब्जी का व्यापार करते हैं. दोनों मिलकर अब अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ा रहे हैं. इस तरह से ललिता आगे बढ़ रही हैं. अपने हौसले और मेहनत से आज गांव-समाज में उनकी अलग पहचान बन गयी है. ललिता अब अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन बीता रही हैं.

सर्वेक्षण का मिला प्रशिक्षण

रंजू देवी

प्रखंड : बसंतराय
जिला : गोड्डा

गोड्डा जिले के बसंतराय प्रखंड में तीन दिवसीय फैसिलिटेटर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में प्रखंड विकास पदाधिकारी शेखर कुमार, प्रखंड समन्वयक आशीष रंजन, पंचायत सचिव अरविंद साह समेत प्रखंड के अन्य कर्मचारी और जेएसएलपीएस के पदाधिकारी व दो फैसिलिटेटर शामिल हुए. प्रशिक्षण के दौरान महिला फैसिलिटेटर को बताया गया कि किस प्रकार से गांव-गांव में घूम कर सर्वेक्षण करना है. सर्वेक्षण किस आधार पर करना है. किन चीजों के बारे में पूछताछ करनी है. इन सभी चीजों के बारे में विस्तार से उन्हें बताया गया. सरकार की लाभकारी योजनाओं को धरातल पर उतारने के उद्देश्य से इस प्रशिक्षण का आयोजन किया गया. पहले दिन मनरेगा की विस्तृत जानकारी दी गयी. मनरेगा क्या है. मनरेगा के तहत कितने प्रकार की योजनाएं चलायी जाती हैं. जैसे तालाब निर्माण, डोभा निर्माण आदि योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया गया. प्रत्येक वार्ड में पांच लाख तक की राशि की योजना ली जा सकती है. सरकारी योजनाओं को गांव से जोड़ना है. स्टेप बाई स्टेप सर्वे कर मोबाइल एप मिशन अंत्योदय में डाटा अपलोड करने से पूरी जानकारी सरकार तक पहुंच जाती है.

epaper.panchayatnama.com